॥ श्री राधा चालीसा ॥

संपूर्ण पाठ

राधा चालीसा

श्री राधारानी की भक्ति, प्रेम और समर्पण को समर्पित

..

जय श्री राधे।

जय श्री राधा-कृष्ण।

राधा चालीसा पाठ

यह श्री राधारानी को समर्पित राधा चालीसा के संपूर्ण पाठ के लिए तैयार की गई है। भक्त इसे दैनिक पूजा, राधा अष्टमी, जन्माष्टमी तथा अन्य राधा-कृष्ण भक्ति के अवसरों पर श्रद्धापूर्वक पढ़ सकते हैं।

॥ दोहा ॥

श्री राधे वृषभानुजा, भक्तन प्राणाधार।
वृन्दावपिन विहारणि, प्रणवौं बारंबार॥

जैसौ तैसौ रावरौ, कृष्ण प्रिया सुखधाम।
चरण शरण निज दीजयि, सुन्दर सुखद ललाम॥

॥ चौपाई ॥

1. जय वृषभानु कुँवरि श्री श्यामा। कीरति नंदनि शोभा धामा॥

2. नित्य विहारनि श्याम अधारा। अमित मोद मंगल दातारा॥

3. रास विलासनि रस विस्तारनि। सहचरि सुभग यूथ मन भावनि॥

4. नित्य किशोरी राधा गोरी। श्याम प्राणधन अति जिय भोरी॥

5. करुणा सागर हिय उमंगनि। ललितादिक सखियन की संगनि॥

6. दनि कर कन्या कूल विहारनि। कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनि॥

7. नित्य श्याम तुमरौ गुण गावैं। राधा राधा कहि हिरषावैं॥

8. मुरली में नित नाम उचारें। तुव कारण लीला वपु धारें॥

9. प्रेम स्वरूपणि अति सुकुमारी। श्याम प्रिया वृषभानु दुलारी॥

10. नवल किशोरी अति छवि धामा। द्युति लघु लगै कोटि रति कामा॥

11. गौरांगी शशि निदिक बदना। सुभग चपल अनियारे नयना॥

12. जावक युत युग पंकज चरना। नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना॥

13. संतत सहचरि सेवा करहीं। महा मोद मंगल मन भरहीं॥

14. रसकिन जीवन प्राण अधारा। राधा नाम सकल सुख सारा॥

15. अगम अगोचर नित्य स्वरूपा। ध्यान धरत निशिदिनि ब्रज भूपा॥

16. उपजेउ जासु अंश गुण खानी। कोटिन उमा रमा ब्रह्मानी॥

17. नित्य धाम गोलोक विहारिनि। जन रक्षक दुख दोष नसावनि॥

18. शिव अज मुनि सनकादिक नारद। पार न पाँइ शेष अरु शारद॥

19. राधा शुभ गुण रूप उजारी। निरखि प्रसन्न होत बनवारी॥

20. ब्रज जीवन धन राधा रानी। महिमा अमित न जाय बखानी॥

21. प्रीतम संग देइ गलबाँही। बिहरत नित वृन्दावन माँही॥

22. राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा। एक रूप दोउ प्रीति अगाधा॥

23. श्री राधा मोहन मन हरनी। जन सुख दायक प्रफुलित बदनी॥

24. कोटिक रूप धरें नंद नंदा। दर्श करन हित गोकुल चन्दा॥

25. रास केलि करि तुम्हें रिझावें। मान करौ जब अति दुःख पावें॥

26. प्रफुलित होत दर्श जब पावें। विविध भांति नित विनय सुनावें॥

27. वृन्दारण्य विहारिनि श्यामा। नाम लेत पूरण सब कामा॥

28. कोटिन यज्ञ तपस्या करहू। विविध नेम व्रत हिय में धरहू॥

29. तऊ न श्याम भक्तहिं अपनावें। जब लगि राधा नाम न गावें॥

30. वृन्दाविपिन स्वामिनी राधा। लीला वपु तब अमित अगाधा॥

31. स्वयं कृष्ण पावैं नहिं पारा। और तुम्हें को जानन हारा॥

32. श्री राधा रस प्रीति अभेदा। सादर गान करत नित वेदा॥

33. राधा त्यागि कृष्ण को भजहिं। ते सपनेहु जग जलधि न तरहिं॥

34. कीरति कुँवरि लाड़िली राधा। सुमिरत सकल मिटहिं भवबाधा॥

35. नाम अमंगल मूल नसावन। त्रिविध ताप हर हरि मनभावन॥

36. राधा नाम लेइ जो कोई। सहजहि दामोदर बस होई॥

37. राधा नाम परम सुखदाई। भजतहिं कृपा करहिं यदुराई॥

38. यशुमति नन्दन पीछे फिरिहैं। जो कोऊ राधा नाम सुमिरिहैं॥

39. रास विहारिनि श्यामा प्यारी। करहु कृपा बरसाने वारी॥

40. वृन्दावन है शरण तिहारी। जय जय जय वृषभानु दुलारी॥

॥ समापन दोहा ॥

श्रीराधा सर्वेश्वरी, रसकिेश्वर घनश्याम।
करहुँ नरिंतर बास मैं, श्रीवृन्दावन धाम॥

भक्ति संदेश
राधा चालीसा का पाठ श्रद्धा, प्रेम और समर्पण के भाव से करें। पूजा की विशेष विधि या संकल्प के लिए अपनी परंपरा के अनुसार योग्य पंडित से मार्गदर्शन लिया जा सकता है।

—

..